शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

हिंदू धर्म की व्यापक वृत्ति

विनोबा

आपको हिंदू धर्म ने यह अधिकार दिया है कि अगर कोई राम को आदर्श न समझे, उन्हें रामायण पसंद न पड़े, तो वे उसे न पढ़ें और दूसरी किताब पढ़ें। हिंदूधर्म की यह सबसे बड़ी विशेषता है, ऐसा हम समझते हैं। यह हमने दूसरे किसी धर्म में नहीं देखी। सब धर्मों में बहुत-सी अच्छी चीजें हैं, यह हम जानते हैं और हम उनका ग्रहण भी करते हैं। फिर भी ईसाई यह कभी नहीं कहेगा कि 'अगर तुम्हें बाइबिल पसंद नहीं, तो उसे छोड़ दो और दूसरी कोई किताब पढ़ो।' वह यही कहेगा कि 'अगर तुम्हें बाइबिल पसंद नहीं, तो तुम ईसाई नहीं हो।' किंतु हिंदूधर्म इस तरह नहीं कहता। वह कहता है कि अगर तुम्हें रामायण पसंद नहीं है, तो तुम भागवत पढ़ो, भागवत पसंद नहीं है, तो गीता पढ़ो, और गीता पसंद नहीं है तो 'तिरुवाचकम्' पढ़ो। इतनी उदारता इस धर्म में है। हिंदूधर्म किसी व्यक्तिविशेष के साथ जुड़ा नहीं है। राम का भक्त राम की भक्ति करता है और कृष्ण का भक्त कृष्ण की भक्ति करता है और रामायण भी पढ़ता है। शिवभक्त दोनों ही नहीं पढ़ता और केवल शैवमार्ग देखता है। इसी तरह कोई उपनिषद पढ़ता है, तो कोई योगशास्त्र। हिंदूधर्म में पांच-पचास ग्रंथ पड़े हैं। उनमें कुछ किताबें कुछ किताबों से भिन्न बातें कहने वाली भी हैं, लेकिन उनमें से कोई भी किताब आप पढ़ते हैं और आपकी चित्तशुद्धि होती है, तो वह हिंदूधर्म को कबूल है। जैसे ईसाई धर्म ईसा के साथ जुड़ा हुआ है ईस्लाम धर्म मुहम्मद के साथ जुड़ा हुआ है, वैसे भागवत धर्म जरूर कृष्ण के साथ जुड़ा हुआ है पर हिंदूधर्म न राम-कृष्ण के साथ जुड़ा हुआ है और न शिव के साथ। वह न तो सगुण ईश्वर के साथ जुड़ा है और न निर्गुण ईश्वर से। हम तो यह भी कहना चाहते हैं कि वह ईश्वर से भी जुड़ा हुआ नहीं है।

अगर हम इतने उदार धर्म में हैं, तो हमें किसी से द्वेष करने की जरूरत नहीं। जो पसंद नहीं, उसे छोड़ दें और जो पसंद है, उसे ले लें। रामायण-भागवत पढ़ना ही क्या मनुष्य का कार्य है ? वैसे पढ़ना ही मनुष्य का कार्य नहीं। मनुष्य का कार्य है, चित्त की शुद्धि करना, आत्मा का दर्शन करना। निर्दोष हृदय ही सच्चा धर्म है। उस चित्तशुद्धि के लिए रामायण की मदद होती है, तो रामायण पढ़ो। हम अपनी गरज से रामायण पढ़ेंगे। उससे चित्तशुद्धि नहीं होती और दूसरे से होती है, तो दूसरा ग्रंथ पढ़ेंगे। इसलिए सारे ग्रंथ हमारे लिए हैं, हम उन ग्रंथों के लिए नहीं, ऐसा हिंदूधर्म कहता है। अतः इसके बारे में कोई झगड़े की बात नहीं। फिर भी अगर उनका उपयोग इस तरह विरोध बढ़ाने में करेंगे, तो हिंदुस्तान की ताकत क्षीण होगी। - **संत समागम, विनोबा साहित्य, खण्ड 9**